रात्री हो तुम

रात्री हो तुम धात्री हो
कभी अमा कभी
राका रजनी की यात्री हो
प्रणयिनी मेरे लज्जा विभाव छोड़ कर
कनक चंपा शिव के सिर पर चढ़ा कर
स्वप्न विभोर में तुम्हारे आने का पथ पर
निद्रा से जाग कर विनिद्र रजनी बीता कर
तुम्हारा आना ही प्रणय वेला की
विजय-घोष हो
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री हो।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
मन गहन के निषिद्ध इलाके में
तुम्हारा स्वच्छन्द गति हो
तुम सचमुच पद्म पत्र के ढलते जल हो
तुम कुमारी कुई के मन-चिंतन के छल हो
तुम कुमारी कन्या के मन आतंकित कोह हो
तुम शर्मीली वधू के तंद्रालु देह के मोह हो
तुम मैत्री केतन उड़ा सकती हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
तुम घन अंधकार आच्छन्न निशीथ मूर्त्ति हो
तुम नील आसमान के प्रतीक्षित एक चांद हो
तुम कामुक प्रिया के तंद्रा ओतप्रोत स्वप्न हो
तुम नील नयनों के प्रिया के एकांत काम्य हो
तुम सरल तरल नायिका अंग के प्रासाद हो
तुम उज्वल ज्योत्स्ना के दीप्ति पथ रथी हो
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री हो।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
व्यस्त जीवन में रंग भर कर
शांति में हो तृप्ति में हो
वारूणी गगन अरुणिमा हुए सायाह्न में
तुम्हारा मुख दिखता है
प्राची गगन के अयन में
थोडी-थोडी नजरें मिलाकर दिग्वलय में
प्रिय पथ श्रांत प्रिया जो होती है दुःख में
क्या कहती हो उसके कानों में

सचमुच तुम हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
चाँद के आइने में मुख देखने का व्रती हो
कृष्ण कवरी भर दो तारों के फूलों में
चाँद उसमें हीरक पदक के रुप में झूले
कभी रात को दहेलीज पर विहंग गाते
प्रीति उपचार की गीति
कभी मुग्ध मानस में प्रियतमा देखती
तन्मय में प्रीति रीति
तंद्राधारित नयन से निद्रा खो देती हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
लज्जा उत्तरीय उतार सकती रात्री हो
तेरे बिना प्रिया स्वप्न विलास रचता नहीं
मुक्त आसमान में अभिसार रचने को
ड़रता नहीं
तुम घन अंधकार में प्रेम की
रोशनी रच सकती हो
प्रेमिका प्रिया के कवरी के सुगंध में
निशीथ में तुम भीग सकती हो
प्रेम के लिए तुम मुग्ध अयन
खोल तो दो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी के यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
तुम कवि की कविता,
कविता की छंद गीति हो
प्रेमिका आंखों से काजल छुड़ा कर
कृष्ण कवरी के अंधेरा रंग लगा कर
प्रेम की जुदाई वेदना ज्वाला को
मधुर रंग में सजा कर
छिन्न वीणा में मधुर झंकार का
वलय रचा कर
वेदना सिक्त मधुवन सृजन कर
संशयित हो मधु रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
तुम कोमल चाँद में आलोकित
एक ज्योत्स्ना विधौत की मूर्त्ति हो
तुम सुभासित फूलों में सुवास मिला देती हो
केवड़ा केतकी के शुभ्र सुमन में महक भर
देती हो
नदी के कछार में काश फूल का
शुभ्र चँवर खोल
कनक चंपा के मृदु सुगंध में रजनीगंधा
डांवाडोल
अनेक प्रेमिका के रात्र अधिवास
सचमुच साक्षी तुम हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी के यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
लंपट के होंठ में मदिरा के गंध में
वास्नायित तुम रात्री हो
जब चषक की ध्वनि गहरी निशीथ में आती

जब वारवधू प्रिया प्रेमिक उर में लुटती
जब प्यासी ढूँढ़ता निशीथ का न हो अन्त
जब वास के शया में मुक्त अलक पंक्ति
न होता शांत
नववधू के लिए मार्जन सुहाग का
पथ दिखओ हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
तुम स्वप्न विधुर उदासी प्रिया के
चंदन चर्चित मूर्त्ति हो
अभीसार के मद में कामिनी कुल वह
तिमिर के मौन में मग्न
प्रणयी के पास चलते हैं मन
उद्वेलित प्रेम सोच कर
प्रियतम उधर प्रिया से बंदी
अश्रु नीहार पोछ कर
पाट साड़ी के सुवासित अंश
प्रणय अश्रु में भीग कर
कुमुद धवल सुन्दर शफरी
नजरों में देखती हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की रात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
स्वच्छ सलिला मन्दाकिनी नदी
नीरवेणी तुम्हारी कांति हो
तुम्हारे अयन में सिक्त माटी का गंध
शीतल सुरभी सुगंध में मोद
नग्न जांघ के अगंना प्रेम में
उत्फुलित देह वास
लूट लिया था तन्मयी रात्री बहता गंध सुवास
तुम तो क्षुधार्त प्रिया की कामना हो
प्रशांति के रंग में रंगाती हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
नील नयनाक्षी अम्बुद के तुल्य
अभिसार में रचती मैत्री हो
तुम आलसी प्रिया के होंठ में खिलाती हंसी
उर्मिफेनिल प्रिया के अंग से
प्रणय वास उतारती
तुम मृदमंद में गिरिकंदर में
तिमिर में छुप कर आती
प्रेमिका प्रिया के हृद तिमिर को
रंग में उतार देती
तुम श्वेत बलाहक आलोक में हो
आलोकित हो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
रात्री हो तुम स्मृति गजरे
नित्य गूँथ सकती हो
देउली पहाड़ कन्दरा के भीतर सो जाते हो
शर्मिली राधा के अभिसार पथ खोल कर
मन गहन के स्मृति में खिलाते
विरह के कदंब फूल
फागुन का सुगंध खिला सकती हो
चैत्र निशि में बेहत्तर
तुम मुग्ध कवि के काव्य कानन में

प्रेम का ढालती हो नींव
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
पंक में कमल विकशित कर
स्मृति की अमरावती सृजन करती हो
जव वृषभानु पुत्री पांव दबा कर
कुंज कानन में घुमती है
अनंग मंत्र में अभिमंत्रित
वह कृष्ण के उर को चुमती है
तुम अभिनन्दित हो मानसी वधू
तुम निशिथ में चखाती प्रेम प्याला का मधु
अनेक प्रेम के उद्वेलित कोह
समाहित करो रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
तुम शीत रात्र के शांत कुहरा
परोसा हेमन्त की कांति हो
तुम कोणार्क के लास्य
वनजवाला की छवि हो
तुम सागर वेला के ज्योतिर्मयी अनुभवी हो
इंद्रधनुष के सप्तरंग का अचिंत्य रूप लेकर
मन गहन के रूप इशारों में
अपने को खो कर
तुम चीर सुदीप्ता यौवनांगी हो
तुम हो अति लावण्यमयी रात्री
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
विकच राजीव उषा के आगमन में
तुम तो शांति लेती हो
स्वप्न नायिका मानसी हो तुम
दूर पहाड़ के झरने की तरह बहती रहो
तुम्हारे रंग में रंगती बाला
जीवन की नैया चलती बहुत भारी
तुम विजयी कानन में मैत्री की
वार्ता तोड़ती हो
तुम चारुहासिनी के गालों में
लालिमा लगाती हो
तुम मृदु मल्हार के स्वर रच सकती हो
प्रिया के अंगन में नित्य
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री हो।

०००

रात्री हो तुम धात्री हो
श्रावणी कन्या मानसी प्रिया के
मन उत्फुल्लित प्रीति हो
तुम हृदय वलय के वक्ष पर
खिलाती फूल हो
प्रीति सुबह के पंक्षी के मधुर स्वर
न तुम्हारे तुल्य हो
आंखों में प्रिया के
तंद्रा मधुर अभिप्सा पुलक की कांति
हृदय में लगा
स्वप्न सागर नीलिमा की हेम मूर्त्ति
इंद्रधनुष के रंग लगा कर
आँसू के कागजों में रोज कविता लिखाती हो
रात्री हो तुम राकारजनी की यात्री हो।

* * *